दैनिक भास्कर

जोधपुर. मंगलवार, 2 फरवरी 2010

आठ दिवसीय प्रशिक्षण आज से

जोधपुर। काजरी में आठ दिवसीय प्रशिक्षण मंगलवार से शुरू होगा। प्रधान वैज्ञानिक एवं पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. बीके माथुर ने बताया कि पशुओं से अधिक दुग्ध उत्पादन लेने व पशुओं के कुशल प्रबंधन पर यह प्रशिक्षण केन्द्रित रहेगा। उद्घाटन काजरी के निदेशक डॉ.. एनवी पाटिल करेंगे।

दैनिक नवज्योति

जोधपुर, मंगलवार, 2 फरवरी, 2010

● पशु पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम आज से

जोधपुर। केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान काजरी में पशुपालन पर आठ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मंगलवार से शुरु होगा। संस्थान के निदेशक डॉ. एनवी पाटिल कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कई राज्यों से आए पशु चिकित्सक व अधिकारी पशुपालन को लाभदायक व्यवसाय के रुप में बढ़ावा देने के लिए पशुपालकों को प्रशिक्षित करेंगे। संस्थान के पाठ्यक्रम समन्वयक व प्रधान वैज्ञानिक डॉ. वीके माथुर ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान पशुपालकों को शुष्क क्षेत्र में ग्रामीणों के जीवन उत्थान में पशुओं का महत्व, पोषक पशु आहार बनाने, पशुओं को विभिन्न बीमारियों से बचाने के उपायों आदि कई उपयोगी जानकारी दी जाएगी।

दैनिक जलतेदीप

जोधपुर, मंगलवार 2 फरवरी 2010

काजरी में पशु पालन पर प्रशिक्षण आज से

जोधपुर 1 फरवरी (कासं)। केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान काजरी, जोधपुर में पशुपालन पर आठ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम कल से शुरू होगा। संस्थान के निर्देशक डा. एन. बी. पाटिल उद्घाटन करेंगे।

कार्यक्रम में पशु चिकित्सक व अधिकारी, पशुपालकों को प्रशिक्षित करेंगे।

संस्थान के पाठ्यक्रम समन्वयक व प्रधान वैज्ञानिक डा. बी. कें. माथुर ने बताया कि पशुपालकों को शुष्क क्षेत्र में ग्रामीणों के जीवन उत्थान में पशुओं का महत्व, पोषक पशु आहार बनाने एंव पशु उत्पाद बढ़ाने की विधि, पशुओं के लिए आरामदायक पशुबाड़ों का निर्माण एंव पशुओं को विभिन्न बीमारियों से बचाने के उपायों की जानकारी दी जायेगी।

दैनिक भास्कर

सिटी इवेंट्स

जोधपुर | रविवार, 31 जनवरी, 2010

पंचकूटे की सब्जी में घुलेगी मिठास

पूनमचंद विश्नोई. जोधपुर

अपने अनूठे स्वाद के लिए दुनिया भर में मशहूर मारवाड़ के पंचकूटे की सब्जी अब अपनी मिठास के लिए भी पहचानी जाएगी। यह खेजड़ी में वानस्पतिक प्रसारण विधि (कलिकायन) के प्रयोग से संभव हुआ है। इस विधि से पनपने वाली खेजड़ी की सांगरी का स्वाद मीठा हो जाएगा। आम तौर पर दस से बारह साल में फल देने वाली खेजड़ी मात्र दो साल में ही फलियां भी देने लगेगी।

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) के वैज्ञानिकों ने बरसों की मेहनत के बाद इसमें सफलता हासिल की है। इसके माध्यम से राज्यवृक्ष खेजड़ी से अब दो साल बाद ही फल (सांगरी) लिया जा सकेगा। यह सांगरी मीठी व उच्च गुणवत्ता वाली तो होगी ही, खेजड़ी से मिलने वाला चारा (लूंग) भी पौष्टिकता से भरपूर होगा। आमतौर से एक खेजड़ी का पेड़ उगने के बाद दसवें या बारहवें साल में फल देना शुरू करता है। गुणवत्ता के लिहाज से भी 15 से 20 प्रतिशत पेड़ों की फलियां ही उपयोगी होती हैं। खेजड़ी में कलिकायन के बाद अब सौ फीसदी सांगरी मीठी मिलेगी।

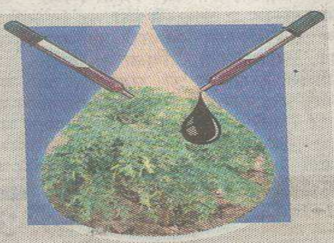

दो साल में फल

इस विधि से खेजड़ी मात्र दो साल में फल देने लगती है। फिलहाल तीस से ज्यादा ऐसे पेड़ काजरी परिसर में लहलहा रहे हैं। खास बात है कि इनमें एक भी पेड़ कंटीला नहीं है। इस विधि से उच्च गुणवत्ता वाले पेड़ों का संरक्षण तो संभव हुआ ही है साथ ही मातृ पौधों के गुण शिशु पौधों के जरिए जिंदा रह सकेंगे। सांगरी मीठी होने से मारवाड़ में बनाई जाने वाली सूखी सब्जी पंचकूटा में और मिठास घुलेगी।

कालिकायन विधि से मारवाड़ में खेजड़ी से उन्नत किस्म की सांगरी मिलेगी। भविष्य में अच्छी किस्म समाप्त होने का खतरा भी मिट जाएगा।

डॉ. पीआर मेघवाल वैज्ञानिक उद्यानिकी विभाग काजरी

यूं मिली कामयाबी

काजरी के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2006 में खेजड़ी की कलिकायन विधि पर काम करना शुरू किया। इसके तहत साधारण बीजों वाले पौधे उगाए गए। जब ये पौधे थोड़े बड़े हुए तो इनको ऊपर से काट दिया गया। काटने के बाद उच्च गुणवत्ता वाले पेड़ों की छाल के छोटे से भाग को वानस्पतिक प्रवर्धन विधि से इन पौधों के तने पर प्लास्टर की तरह बांध कर रखा गया। जैसे जैसे ये पौधे बड़े हुए उनमें उच्च गुणवत्ता का प्रवर्धन होता गया। दो साल बाद इन पर जब फल आए तो वे मिठास से भरपूर थे।